Appointments

डॉ० कविता कुमारी सिंह
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

स्नातक, खण्ड द्वितीय

विषय — छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ का शेष भाग

प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी आदि छायावाद के सभी प्रमुख कवियों ने प्रकृति का नारी रूप में चित्रण किया है। उदाहरण

'तुम्हारे छूने में था प्राण
संग में पावन गंगा स्नान
तुम्हारी वाणी में कल्याणी
त्रिवेणी की लहरों का गान।'

रहस्यानुभूति — छायावादी कवियों की अज्ञात सत्ता के प्रति एक विशेष आकर्षण रहा है। वह प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ में उसी सत्ता का दर्शन करता है। उसका उस अनन्त के प्रति प्रमुख रूप से विस्मय और जिज्ञासा का भाव है निराला तत्वज्ञान के कारण, तो पंत प्राकृतिक सौंदर्य से रहस्योन्मुख हुए। प्रेम और वेदना से ने

have learned over the years that when one's mind is made up...

महादेवी की अवश्य ही रहस्य-साधना की दृढ़ता दिखाई पड़ती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में: "कवि उस अनन्त अज्ञात प्रियतम को आलंबन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से अभिव्यंजना करते हैं: . . . . तथा छायावाद का एक अर्थ रहस्यवाद भी है।" एक उदाहरण —

"हे अनन्त रमणीय कौन तुम,
यह मैं कैसे कह सकता,
कैसे हो, क्या हो इसका तो
भार विचार न सह सकता? (प्रसाद)

<u>वेदना</u> और करुणा की विवृति — छायावादी कविता में वेदना की अभिव्यक्ति करुणा और निराशा के रूप हुई है। जीवन में मानव मन की आकांक्षाएँ और अभिलाषाएँ की असफलता पर कवि हृदय क्रन्दन करने लगता है। प्रसाद ने 'आँसू' में वेदना को सा रूप दिया है। पंत तो प्रकृति की उत्पत्ति ही वे मानते हैं — 'वियोगी होगा पहला कवि, आह से निकला होगा गान।

'उमड़ कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।"

महादेवी तो पीड़ा में ही अपने प्रिय को ढूंढती है —
"तुमको पीड़ा में ढूंढा, तुममें ढूंढूंगी पीड़ा।"

<u>मानवतावादी दृष्टिकोण</u> — छायावादी काव्य भारतीय सर्वात्मवाद तथा अद्वैतवाद से गहरे रूप से प्रभावित है। इस काव्य पर रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, गांधी, टैगोर तथा अरविन्द दर्शन का भी काफी प्रभाव रहा। छायावादी कवि सारे संसार से प्रेम करता है। उसके लिए भारतीय और अभारतीय में कोई भेद नहीं, सर्वत्र एक ही आत्मा व्याप्त है।

<u>आदर्शवाद</u> — छायावाद में आंतरिकता की प्रवृत्ति की प्रधानता है। उसमें चीजों को बाह्य स्थूल रूप चित्रण की प्रवृत्ति नहीं है। स्थूलता के चित्रण के बजाय अपनी अनुभूतियाँ अधिक सर्वोच्च लगती है। यही कारण है कि उनका काव्य संबंधी दृष्टिकोण कल्पनात्मक और उसमें सुन्दर तत्वों की प्रधानता रही।

देश-प्रेम और राष्ट्रीय भावना – छायावादी कवि रहस्यात्मकता और राष्ट्रप्रेम की भावनाओं को साथ-साथ लेकर चला। राष्ट्रीय जागरण ने छायावाद को व्यक्तिवाद की असामाजिक पथों पर भटकने से बचा लिया। यही कारण है कि जयशंकर प्रसाद पुकार उठे हैं :— 'अरुण यह मधुमय देश हमारा'
या माखन लाल चतुर्वेदी ने कहा है —

"मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।"

छंद और अलंकार विधान – इन कवियों ने मु… में कविताएँ लिखी हैं। इनमें प्राचीन छन्दों के सा… नवीन छन्दों के निर्माण की प्रवृत्ति भी मिलती है। छायावादी कवियों ने हिन्दी के प्राचीन … के साथ-साथ अंग्रेजी साहित्य के दो अलंकार – और विशेषण विपर्यय का अधिक प्रयोग किया है। दृश्यों के चित्रण में मानवीकरण है।